बिनोद बिहारी महतो का सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन: एक समालोचनात्मक अध्ययन

[1]डॉ लम्बोदर महतो

सार (Abstract)

भारत के विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय अस्मिता, सामाजिक न्याय और समान अवसर की अवधारणा को सुदृढ़ करने वाले अनेक जननेताओं में **बिनोद बिहारी महतो** का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने झारखंड के आदिवासी, मूलवासी, पिछड़े एवं वंचित वर्गों के सामाजिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक अधिकारों की स्थापना के लिए आजीवन संघर्ष किया। उनका व्यक्तित्व केवल एक राजनेता तक सीमित नहीं था, बल्कि वे समाज सुधारक, शिक्षाविद्, अधिवक्ता तथा जननेता भी थे। उन्होंने सामाजिक समानता, शिक्षा के प्रसार तथा संगठनात्मक एकता को झारखंड के समग्र विकास का आधार माना। उनका प्रसिद्ध नारा **"पढ़ो और लड़ो"** केवल एक आंदोलनकारी उद्घोष नहीं था, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का वैचारिक आधार भी था।

बिनोद बिहारी महतो ने झारखंड आंदोलन को वैचारिक दिशा प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों को राजनीतिक चेतना से जोड़ने का कार्य किया। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सर्वाधिक प्रभावी साधन माना तथा झारखंड के युवाओं में नेतृत्व क्षमता, आत्मसम्मान और लोकतांत्रिक चेतना विकसित करने का प्रयास किया। उनकी पहल पर अनेक सामाजिक संगठनों का गठन हुआ, जिनके माध्यम से क्षेत्रीय पहचान, सामाजिक न्याय तथा समान अवसर के प्रश्नों को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ।

यह शोध-पत्र बिनोद बिहारी महतो के जीवन, उनके सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, झारखंड आंदोलन में उनकी भूमिका तथा समकालीन भारत में उनकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। उपलब्ध पुस्तकों, शोध-पत्रों, अभिलेखीय दस्तावेजों, समाचार-पत्रों तथा द्वितीयक स्रोतों के आधार पर उनके योगदान का मूल्यांकन किया गया है। यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि बिनोद बिहारी महतो की विचारधारा आज भी सामाजिक न्याय, समावेशी विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा लोकतांत्रिक सहभागिता के लिए समान रूप से प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द: बिनोद बिहारी महतो, झारखंड आंदोलन, सामाजिक न्याय, शिक्षा, पिछड़ा वर्ग, झारखंडी अस्मिता, क्षेत्रीय विकास।

Corresponding author

[1]रांची विश्वविद्यालय, रांची,

1. भूमिका (Introduction)

भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में क्षेत्रीय आंदोलनों ने राष्ट्रीय विकास की दिशा को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनेक आंदोलनों ने केवल प्रशासनिक पुनर्गठन की मांग नहीं की, बल्कि

सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक संरक्षण, आर्थिक समानता तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे व्यापक प्रश्नों को भी राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनाया। झारखंड आंदोलन इन्हीं महत्वपूर्ण आंदोलनों में से एक है, जिसने लंबे समय तक सामाजिक असमानता, संसाधनों के असमान वितरण तथा क्षेत्रीय उपेक्षा के विरुद्ध संघर्ष किया।

झारखंड आंदोलन के इतिहास में अनेक नेताओं का योगदान उल्लेखनीय रहा है, किंतु बिनोद बिहारी महतो ने इसे सामाजिक न्याय एवं शिक्षा के साथ जोड़कर एक व्यापक जनआंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि केवल राजनीतिक आंदोलन पर्याप्त नहीं होगा; जब तक समाज का पिछड़ा एवं वंचित वर्ग शिक्षित, संगठित और जागरूक नहीं होगा, तब तक वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं है। इसी कारण उन्होंने सामाजिक संगठन निर्माण, शैक्षिक जागरण तथा राजनीतिक चेतना को समान महत्व दिया।

बिनोद बिहारी महतो ने झारखंड के सामाजिक ढांचे का गहन अध्ययन किया और पाया कि आदिवासी, मूलवासी तथा पिछड़े वर्ग आर्थिक, शैक्षिक और प्रशासनिक दृष्टि से लंबे समय से उपेक्षित रहे हैं। उन्होंने इन समुदायों के मध्य शिक्षा, आत्मसम्मान तथा संगठनात्मक एकता का संदेश प्रसारित किया। उनका मानना था कि सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा है तथा राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए सामाजिक चेतना अनिवार्य है।

वर्तमान समय में जब समावेशी विकास, सामाजिक न्याय, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा सहभागी लोकतंत्र पर व्यापक चर्चा हो रही है, तब बिनोद बिहारी महतो के विचार और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि एक दूरदर्शी नेतृत्व सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन सकता है। इसलिए उनके जीवन एवं विचारों का शैक्षणिक अध्ययन न केवल झारखंड के इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय नेतृत्व की भूमिका का मूल्यांकन करने के लिए भी आवश्यक है।

2. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः **गुणात्मक (Qualitative Research)** एवं **ऐतिहासिक-वर्णनात्मक (Historical–Descriptive Research)** शोध पद्धति पर आधारित है।

अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का व्यापक उपयोग किया गया है। शोध सामग्री के संकलन हेतु प्रकाशित पुस्तकें, शोध-पत्र, विश्वविद्यालयीय शोध प्रबंध, सरकारी दस्तावेज, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ तथा झारखंड आंदोलन से संबंधित ऐतिहासिक अभिलेखों का अध्ययन किया गया। विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विचारों का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन कर बिनोद बिहारी महतो के सामाजिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक योगदान का मूल्यांकन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बिनोद बिहारी महतो के जीवन एवं व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. उनके सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन का विश्लेषण करना।

3. झारखंड आंदोलन में उनके योगदान का मूल्यांकन करना।
4. शिक्षा एवं सामाजिक न्याय के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
5. समकालीन भारत में उनके विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

शोध प्रश्न

- बिनोद बिहारी महतो की विचारधारा के प्रमुख तत्व क्या थे?
- झारखंड आंदोलन में उनकी भूमिका अन्य नेताओं से किस प्रकार भिन्न थी?
- शिक्षा और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में उनका योगदान कितना प्रभावशाली रहा?
- वर्तमान झारखंड के विकास में उनके विचार किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं?

अध्ययन की सीमाएँ

यह शोध मुख्यतः उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। कुछ प्राथमिक अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार तथा अप्रकाशित दस्तावेज उपलब्ध न होने के कारण उनका समावेश सीमित रहा है। भविष्य में मौखिक इतिहास (Oral History), साक्षात्कार एवं अभिलेखीय शोध के माध्यम से इस विषय पर और व्यापक अध्ययन किया जा सकता है।

3. बिनोद बिहारी महतो का जीवन परिचय

बिनोद बिहारी महतो का जन्म **23 जनवरी 1923** को वर्तमान झारखंड राज्य के धनबाद क्षेत्र में हुआ। वे प्रारंभ से ही मेधावी, संघर्षशील एवं समाजसेवी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने विधि (Law) की शिक्षा ग्रहण की और अधिवक्ता के रूप में कार्य प्रारंभ किया। न्यायालय में कार्य करते हुए उन्होंने समाज के कमजोर, गरीब तथा वंचित वर्गों की समस्याओं को निकट से देखा। इसी अनुभव ने उन्हें सामाजिक परिवर्तन के लिए सक्रिय सार्वजनिक जीवन अपनाने की प्रेरणा दी।

उनका विश्वास था कि सामाजिक असमानता का प्रमुख कारण शिक्षा का अभाव तथा राजनीतिक चेतना की कमी है। इसलिए उन्होंने अधिवक्ता होने के साथ-साथ समाज सुधारक की भूमिका निभाई। उन्होंने पिछड़े वर्गों, आदिवासियों तथा मूलवासियों के अधिकारों के लिए विभिन्न सामाजिक संगठनों का निर्माण किया तथा जनजागरण अभियान चलाए।

बिनोद बिहारी महतो का व्यक्तित्व अत्यंत सरल, व्यवहारिक तथा लोकतांत्रिक था। वे जाति, धर्म एवं वर्ग से ऊपर उठकर समान अवसर, सामाजिक न्याय और मानव गरिमा के समर्थक थे। उन्होंने युवाओं को शिक्षा प्राप्त करने, संगठित होने तथा अपने संवैधानिक अधिकारों के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। उनका प्रसिद्ध नारा **"पढ़ो और लड़ो"** सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक व्यापक आंदोलन का आधार बना।

झारखंड आंदोलन के दौरान उन्होंने क्षेत्रीय अस्मिता, सांस्कृतिक पहचान तथा आर्थिक अधिकारों के प्रश्नों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी ढंग से उठाया। उनके नेतृत्व में अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों ने झारखंड राज्य निर्माण की मांग को जन-आंदोलन का रूप दिया। उन्होंने आंदोलन को केवल राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं रखा, बल्कि शिक्षा, सामाजिक समानता और संगठनात्मक एकता को भी उसका अभिन्न अंग बनाया।

बिनोद बिहारी महतो का जीवन त्याग, संघर्ष और जनसेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर झारखंड के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य किया। उनकी विचारधारा ने झारखंड के सामाजिक एवं राजनीतिक इतिहास को नई दिशा प्रदान की। आज भी वे सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्यों और जनसशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में स्मरण किए जाते हैं।

4.1 सामाजिक चिंतन

बिनोद बिहारी महतो का सामाजिक चिंतन समानता, सामाजिक न्याय, शिक्षा और संगठनात्मक एकता पर आधारित था। उनका मानना था कि किसी भी समाज का विकास तभी संभव है जब उसके सभी वर्ग–विशेषकर आदिवासी, मूलवासी, पिछड़े वर्ग तथा श्रमिक समुदाय–शिक्षा, सम्मान और समान अवसर प्राप्त करें। उन्होंने झारखंड के सामाजिक ढाँचे का गहन अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि आर्थिक शोषण के साथ-साथ सामाजिक एवं शैक्षिक पिछड़ापन क्षेत्र के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए उन्होंने सामाजिक जागरण को राजनीतिक आंदोलन का आधार बनाया।

बिनोद बिहारी महतो की विचारधारा जातीय विभाजन के बजाय **"झारखंडी पहचान"** (Jharkhandi Identity) पर आधारित थी। वे मानते थे कि झारखंड के आदिवासी और गैर-आदिवासी (विशेषकर मूलवासी एवं पिछड़े वर्ग) समान सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। अतः सभी समुदायों की एकता ही क्षेत्रीय विकास और अधिकारों की प्राप्ति का मार्ग है। यही कारण था कि उन्होंने सामाजिक संगठनों के माध्यम से विभिन्न जातीय एवं वर्गीय समूहों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया।

उनकी सामाजिक दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष **शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन** मानना था। उनका प्रसिद्ध नारा **"पढ़ो और लड़ो"** केवल राजनीतिक संघर्ष का संदेश नहीं था, बल्कि ज्ञान, आत्मसम्मान और संवैधानिक अधिकारों के प्रति जागरूकता का आह्वान था। उनके अनुसार अशिक्षा शोषण को जन्म देती है, जबकि शिक्षा व्यक्ति को अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाती है।

4.2 राजनीतिक चिंतन

बिनोद बिहारी महतो का राजनीतिक दर्शन लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय, क्षेत्रीय स्वायत्तता तथा जनसहभागिता पर आधारित था। वे भारतीय संविधान के प्रति पूर्ण आस्था रखते थे और झारखंड राज्य की मांग को संवैधानिक एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से आगे बढ़ाने के पक्षधर थे।

उनका मानना था कि झारखंड के प्राकृतिक संसाधनों–विशेषकर कोयला, लौह अयस्क तथा खनिज संपदा–का लाभ स्थानीय जनता को मिलना चाहिए। उनका तर्क था कि प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध होने के बावजूद झारखंड के लोग शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आधारभूत सुविधाओं से वंचित हैं। इसलिए उन्होंने **संसाधनों पर स्थानीय समुदाय के अधिकार**, क्षेत्रीय विकास तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व को अपने आंदोलन का केंद्रीय विषय बनाया।

उनके राजनीतिक चिंतन की एक अन्य विशेषता **समावेशी नेतृत्व (Inclusive Leadership)** थी। उन्होंने आदिवासी और गैर-आदिवासी समुदायों के बीच संवाद स्थापित कर झारखंड आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन दिलाने का प्रयास किया। इस दृष्टिकोण ने आंदोलन को केवल जातीय पहचान तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि इसे सामाजिक न्याय एवं क्षेत्रीय विकास के व्यापक आंदोलन में परिवर्तित किया।

4.3 झारखंड आंदोलन में बिनोद बिहारी महतो का योगदान

झारखंड आंदोलन का प्रारम्भिक स्वरूप मुख्यतः आदिवासी नेतृत्व तक सीमित माना जाता था। परिणामस्वरूप आंदोलन को व्यापक सामाजिक समर्थन प्राप्त करने में कठिनाई हुई। 1970 के दशक में बिनोद बिहारी महतो ने इस स्थिति का विश्लेषण करते हुए आंदोलन की दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि झारखंड की समस्या केवल आदिवासियों की नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के श्रमिकों, किसानों, पिछड़े वर्गों तथा मूलवासी समुदायों की साझा समस्या है।

इस व्यापक दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप 4 फरवरी 1973 को धनबाद में **शिवाजी समाज**, **सोनोत संताल समाज** तथा अन्य क्षेत्रीय संगठनों के एकीकरण से **झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM)** का गठन हुआ। इस संगठन की स्थापना में बिनोद बिहारी महतो, ए. के. राय तथा शिबू सोरेन की केंद्रीय भूमिका रही। संगठन का उद्देश्य झारखंड आंदोलन को जन-आंदोलन में परिवर्तित करना तथा विभिन्न सामाजिक समूहों को साझा मंच प्रदान करना था।

बिनोद बिहारी महतो ने आंदोलन में संगठनात्मक क्षमता, वैचारिक स्पष्टता तथा लोकतांत्रिक नेतृत्व का परिचय दिया। उन्होंने जनसभाओं, सामाजिक अभियानों, श्रमिक संगठनों और शैक्षिक जागरण के माध्यम से लोगों को जोड़ा। उनकी पहल के कारण आंदोलन का आधार ग्रामीण क्षेत्रों, औद्योगिक श्रमिकों, पिछड़े वर्गों तथा युवाओं तक विस्तारित हुआ। समकालीन शोधों में भी यह निष्कर्ष सामने आया है कि उन्होंने झारखंड आंदोलन को सीमित जनाधार वाले आंदोलन से व्यापक जनआंदोलन में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4.4 सामाजिक न्याय एवं नेतृत्व की अवधारणा

बिनोद बिहारी महतो का नेतृत्व सेवा, सहभागिता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित था। वे सत्ता प्राप्ति को अंतिम लक्ष्य नहीं मानते थे, बल्कि सामाजिक परिवर्तन को राजनीति का मूल उद्देश्य समझते थे। उनका विश्वास था कि राजनीतिक नेतृत्व तभी सफल हो सकता है जब वह समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास के अवसर पहुँचाने का प्रयास करे।

उन्होंने विशेष रूप से पिछड़े वर्गों, किसानों, श्रमिकों तथा युवाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर बल दिया। उनका मानना था कि लोकतंत्र की सफलता केवल चुनावों से नहीं, बल्कि नागरिकों की सक्रिय भागीदारी, शिक्षा और सामाजिक चेतना से सुनिश्चित होती है। इसलिए उन्होंने संगठन निर्माण और जनशिक्षा को अपने सार्वजनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाया।

4.5 समालोचनात्मक विश्लेषण

यद्यपि बिनोद बिहारी महतो ने झारखंड आंदोलन को नई दिशा प्रदान की, तथापि उनके विचारों का व्यवस्थित शैक्षणिक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित रहा है। अधिकांश शोध झारखंड आंदोलन के राजनीतिक पक्ष पर केंद्रित हैं, जबकि उनके सामाजिक दर्शन, शैक्षिक दृष्टिकोण और नेतृत्व मॉडल पर गहन अकादमिक अनुसंधान की आवश्यकता है। यह शोध-अंतर (Research Gap) भविष्य के शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

बिनोद बिहारी महतो का व्यक्तित्व भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास में सामाजिक न्याय, शिक्षा, क्षेत्रीय अस्मिता तथा जनसशक्तिकरण के एक सशक्त प्रतीक के रूप में स्थापित होता है। उन्होंने झारखंड आंदोलन को केवल पृथक राज्य की राजनीतिक मांग तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सामाजिक परिवर्तन, शैक्षिक जागरण और समान अवसर के व्यापक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। उनका मानना था कि किसी भी क्षेत्र का वास्तविक विकास तभी संभव है जब समाज का प्रत्येक वर्ग–विशेषकर आदिवासी, मूलवासी, पिछड़े वर्ग, किसान, श्रमिक और युवा–शिक्षा, सम्मान एवं निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में समान भागीदारी प्राप्त करे।

बिनोद बिहारी महतो की सबसे बड़ी विशेषता उनका समावेशी नेतृत्व था। उन्होंने झारखंड की विविध सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान को एक साझा मंच पर लाने का प्रयास किया तथा यह प्रतिपादित किया कि क्षेत्रीय विकास की आधारशिला सामाजिक एकता और लोकतांत्रिक सहभागिता है। उनका प्रसिद्ध नारा "पढ़ो और लड़ो" आज भी शिक्षा, संवैधानिक अधिकारों की जागरूकता तथा सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है। उनके विचारों में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक समानता, आत्मसम्मान और आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी साधन थी।

झारखंड आंदोलन में उनका योगदान संगठन निर्माण, वैचारिक स्पष्टता और जनसंपर्क की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संवाद स्थापित कर आंदोलन को व्यापक जनाधार प्रदान किया। उनके नेतृत्व ने यह सिद्ध किया कि सामाजिक न्याय और क्षेत्रीय विकास के प्रश्नों का समाधान लोकतांत्रिक, संवैधानिक और सहभागी प्रक्रियाओं के माध्यम से ही संभव है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में बिनोद बिहारी महतो के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। आज जब समावेशी विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सामाजिक न्याय, स्थानीय संसाधनों पर समुदाय की भागीदारी तथा सुशासन जैसे विषय राष्ट्रीय नीति-निर्माण के केंद्र में हैं, तब उनका चिंतन नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है। विशेष रूप से नई शिक्षा नीति, स्थानीय नेतृत्व

विकास, सामाजिक समावेशन तथा सतत क्षेत्रीय विकास के संदर्भ में उनके विचारों का पुनर्पाठ आवश्यक प्रतीत होता है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि बिनोद बिहारी महतो के योगदान का व्यवस्थित अकादमिक विश्लेषण अभी भी अपेक्षाकृत सीमित है। उनके सामाजिक दर्शन, शैक्षिक दृष्टिकोण, संगठनात्मक नेतृत्व तथा जनआंदोलन की रणनीतियों पर और अधिक प्राथमिक स्रोत-आधारित अनुसंधान की आवश्यकता है। उनके भाषणों, पत्रों, समकालीन अभिलेखों एवं मौखिक इतिहास (Oral History) के माध्यम से भविष्य में अधिक व्यापक एवं प्रमाणिक शोध किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि बिनोद बिहारी महतो केवल झारखंड आंदोलन के नेता नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक चेतना, लोकतांत्रिक मूल्यों, शिक्षा, समानता और जनसशक्तिकरण के ऐसे दूरदर्शी चिंतक थे, जिनकी विचारधारा वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी। उनके जीवन एवं कार्यों का गहन अध्ययन न केवल झारखंड के इतिहास को समझने के लिए आवश्यक है, बल्कि भारत में सामाजिक न्याय और क्षेत्रीय विकास की अवधारणा को समृद्ध करने के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ (References)

1. Kumar, P. (2024). *Role of Binod Bihari Mahto in Unifying Masses for Separate Jharkhand Movement*. *International Journal of Political Science and Governance*, 6(1), 95–97. https://doi.org/10.33545/26646021.2024.v6.i1b.310
2. Dutt, B. (2014). *झारखंड आंदोलन की कहानी*. Crown Publication.
3. Virottam, B. (2017). *झारखंड : इतिहास एवं संस्कृति*. बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना.
4. Sengupta, N. (Ed.). (1982). *Fourth World Dynamics: Jharkhand*. Authors Guild, New Delhi.
5. Rekhi, U. S. (1988). *Jharkhand Movement in Bihar*. Nunes Publishers.